Page No.:
Date:
YOUVA

कांग्रेस का उदारवादी चरण (1885-1905)

कॉंग्रेस की स्थापना के आरम्भिक बीस वर्षों (1885-1905) के दौरान कॉंग्रेस के राजनीतिक एवं आर्थिक उद्देश्य, नीतियां और कार्यक्रम उदारवादी विचारधारा से प्रभावित एवं पोषित होता रहा है। यद्यपि इस दौरान भी उग्रवादी राजनीति की कोशिशें कभीकभार दिखी, लेकिन उदारवादी तत्वों की प्रधानता के कारण इस काल को 'उदारवादी चरण' (Moderate Phase) कहा जाता है।

आरम्भिक कॉंग्रेसियों के उद्देश्य, नीति एवं कार्यक्रम पर उनकी सामाजिक संरचना का गहरा प्रभाव था। कांग्रेस में शिक्षित, पेशेवर, मध्यवर्ग की प्रधानता थी। ये लोग अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त और अपने-अपने पेशे के सफल व्यवसायी थे। राजनीति उनके लिए अंशकालिक पेशा समान थी। प्रमुख उदारवादी नेता थे - दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, एम.जी. राणाडे, सब्रमण्यम अय्यर आदि।

उदारवादियों के उद्देश्य सीमित थे। उन्होंने वैधानिक तरीकों से शासकीय सुधारों की मांग तक अपने को सीमित रखा। उनकी समस्त मांगों के पीछे यह मूलभूत मान्यता थी कि ब्रिटिश राजतंत्र असीम कल्याणकारी संस्था है और भारतीय समस्या की जड़ें उसके सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन में है जिसे अंग्रेजी सरकार दूर कर सकता है। उनका मानना था कि ब्रिटिश राजमुकुट और प्रजा के बीच नौकरशाही भ्रष्ट एवं दिग्भ्रमित करने वाली है, इसीलिए यदि क्राउन को वस्तुस्थिति से अवगत करा दिया जाए तो शासकीय सुधारों द्वारा बहुत कुछ पाया जा सकता है। इसका पूरक पक्ष यह था कि भारतीय जनमत को निरंतर जागृत किया जाए ताकि वह अपने अधिकारों को समझ सके और सरकार पर दबाव डाले।

उदारवादियों की कार्यप्रणाली मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों की तरह उदार, नरम एवं संवैधानिक थी। वह कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन एवं समाचार पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर सरकारी नीतियों की समीक्षा करते थे तथा उसमें सुधार के लिए ब्रिटिश संसद एवं अधिकारियों के समक्ष 'प्रार्थना' (Prayer) 'प्रतिवेदन' (Petition) एवं 'प्रतिनिधिमंडल' (Delegation) की नीति पर

Scanned with CamScanner

चलते थे। वे ब्रिटिश क्राउन को यह समझाने पर जोर देते थे कि भारतीय मांगें न्यायसंगत हैं जिन्हें पूरा करना प्रशासन का जनतांत्रिक कर्तव्य है। यद्यपि उदारवादियों की सभी माँगें सीधे सरकार को संबोधित होती थी लेकिन निश्चय ही इनसे भारतीय जनता में राजनीतिक बोध का भी प्रसार हुआ।

उदारवादी कॉंग्रेसियों की प्रमुख माँगें संवैधानिक-प्रशासनिक- आर्थिक मुद्दों से संबंधित थीं। उन्होंने सामाजिक-धार्मिक विषयों को छुआ तक नहीं। शुरुआती दिनों में ये माँगें कांग्रेस के लिए घातक हो सकती थी क्योंकि तत्कालीन समाज में काफी मतभेद थे। आगे चलकर तिलक तथा गाँधीजी ने धर्म एवं सामाजिक सुधार को राजनीति से संबद्ध किया।

<1> संवैधानिक माँगें :—

* वे विधायिकाओं में भारतीयों की भागीदारी में वृद्धि चाहते थे।
(ii) उन्होंने पश्चिमोत्तर प्रांत एवं पंजाब में नयी काउंसिलें, वायसराय की कार्यकारी काउंसिल में दो भारतीय सदस्यों की मौजूदगी की माँग की
(iii) ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन स्वशासन की मांग की।

<2> प्रशासनिक सुधार संबंधी माँगें —

(i) लोक सेवा में भारतीयों को अधिकाधिक भर्ती का अवसर दिया जाये अर्थात् सिविल सेवा का भारतीयकरण किया जाये। I.C.S. परीक्षा का इंग्लैंड एवं भारत में एकसाथ आयोजन किया जाये तथा शामिल होने की आयु-सीमा बढ़ाई जाये।
(ii) न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक किया जाये जिससे पुलिस तथा नौकरशाही के अत्याचारों से जनता सुरक्षित रहे। उन्होंने ज्यूरी की शक्तियाँ कम करने का विरोध किया।
(iii) शस्त्र अधिनियम (Arms Act) समाप्ति की माँग की तथा जनता को अपनी तथा अपने देश की रक्षा के लिए शस्त्र रखने की अनुमति दी जाने की माँग की।
(iv) प्राथमिक शिक्षा के प्रसार एवं तकनीकी तथा उच्च शिक्षा हेतु अधिक बजट प्रावधान की माँग की। सरकार से जनकल्याणकारी गतिविधियों पर अधिक ध्यान देने की माँग की।
(v) देश को अकाल से बचाने के लिए बड़े पैमाने पर सिंचाई योजनाएँ

Scanned with CamScanner

लागू करने की माँग की।
(vi) उदारवादियों ने नागरिक अधिकारों की रक्षा की माँग की।

(3) आर्थिक सुधार संबंधी माँगें :-

(i) सैन्य व्यय में कटौती किया जाये।
(ii) भारतीय उद्योगों की सुरक्षा के लिए एक संरक्षणवादी नीति की माँग की
(iii) नमक कर खत्म करने एवं जमीन की मालगुजारी घटाने की माँग
(iv) धन निकासी को रोका जाये।
(v) स्थाई बंदोबस्त को देश के अन्य भागों में लागू किया जाये।
(vi) उन भारतीयों के पक्ष में सुविधाएँ देने की माँग की जो गरीबी से त्रस्त होकर रोजगार की तलाश में दक्षिण अफ्रीका, मलाया, मॉरीशस वेस्टइंडीज चले जाते हैं।

आरम्भिक उदारवादियों की उपलब्धियाँ निम्न-लिखित हैं :-

(i) इन्होंने भारतीय जनमानस में एक व्यापक राष्ट्रीय जागरण को जन्म दिया ताकि उन्हें राजनीतिक कार्यों के लिए प्रशिक्षित किया जाये।
(ii) ब्रिटिश साम्राज्यवाद एवं उसके शोषक चरित्र को प्रकाश में लाया। उन्होंने उपनिवेशवाद की आर्थिक समालोचना पेश की जिसे प्रायः आर्थिक राष्ट्रवाद के नाम से जाना जाता है। दादाभाई नौरोजी ने "धन-बहिर्गमन" का सिद्धांत लोगों के समक्ष रखा। आर. सी. दत्त ने भारत में पड़ने वाले अकालों को प्राकृतिक आपदा मानने से इंकार कर दिया तथा इसके लिए सरकारी नीतियों को जवाबदेह ठहराया। उदारवादियों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा युद्ध पर व्यर्थ के अपव्यय की आलोचना की। इससे ब्रिटिश सरकार का शोषक चरित्र जनता के सामने उजागर हुआ।
(iii) इन्दी के प्रयासों से 1892 का Indian Council Act पारित हुआ।
(iv) 1893 में 'दादा ऑफ कामन्स' में भारत में एवं लंदन में साथ-2 परीक्षा लिये जाने के संबंध में एक विधेयक पारित किया गया।
(v) भारतीय व्यय की जाँच के लिए 1895 में Welby Commission की नियुक्ति की गयी।

कांग्रेस स्थापना के आरम्भिक वर्षों में ब्रिटिश सरकार का रवैया उसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण था, किंतु शीघ्र

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:
YOUVA

ही वह विरोधी की भूमिका में आ गयी। सरकार की यह सोच थी कि कांग्रेस सामाजिक-धार्मिक सुधारों पर जोर देगी और अपनी माँगों को संवैधानिक शब्दों में प्रस्तुत करेगी। लेकिन कॉंग्रेस ने सरकार एवं साम्राज्यवाद की अर्थशास्त्रीय आलोचना द्वारा उसके सार तत्व पर ही हमला बोल दिया। यही कारण है कि ब्रिटिश सरकार कांग्रेस विरोधी हो गई और उसके विरुद्ध प्रति संतुलनकारी तत्वों को बढ़ावा देने लगी।

उदारवादियों की आलोचना कई पहलुओं को लेकर की जाती है। पहला कि उदारवादी कॉंग्रेस का दायरा शिक्षित मध्यवर्ग तक सीमित था। दूसरे कि इसने ब्रिटेन में प्रचार के लिए धन एवं समय का अपव्यय किया और कभी बढ़कर अपनी माँगों को मनवाने के लिए 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' की नीति का पालन किया।

आरम्भिक राष्ट्रवादियों/उदारवादियों के आंदोलन को तार्किक ढंग से देखना उचित होगा। वास्तव में राष्ट्रवादी आंदोलन के आरम्भिक वर्षों में सक्रिय प्रतिरोध एवं पूर्ण विकसित आंदोलन की अपेक्षा रखना न्यायोचित नहीं है वह भी तब जब जनता (भारतीय) राजनीतिक रूप से जागृत न हो और सरकार विरोधी की भूमिका में हो। अपने तमाम कमियों के बावजूद उदारवादियों ने यहाँ की परिस्थितियों का यथार्थ आकलन किया। असम्भव लक्ष्यों की कल्पना नहीं की और कदम-दर-कदम राष्ट्रीय आंदोलन की नींव को मजबूती के साथ खड़ा करने जैसा महत्वपूर्ण कार्य किया जिसके बल पर राष्ट्रीय आंदोलन आगे और भी विकसित हुआ।

— X —

Scanned with CamScanner